श्रीसुब्रह्मण्यकवचम् २

```
{॥ श्रीसुब्रह्मण्यकवचम् २ ॥}
॥ श्रीरस्तु॥
॥ ॐ नमस्सुब्रह्मण्याय ॥
॥ अथ सुब्रह्मण्य कवचम् ॥
अस्य श्री सुब्रह्मण्य कवचस्तोत्र महामन्त्रस्य
अगस्त्यो भगवान् ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्री सुब्रह्मण्यो देवता,
सं बीजं, स्वाहा शक्तिः, सः कीलकं,
श्री सुब्रह्मण्य प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।
हिरण्यशरीराय अङ्गुष्ठाब्यां नमः,
इक्षु धनुर्धराय तर्जनीभ्यां नमः,
शरवणभवाय मध्यमाभ्यां नमः,
शिखि-वाहनाय अनामिकाभ्यां नमः,
शक्ति-हस्ताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
सकल-दुरित मोचनाय करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।
एवं हृदयादि न्यासः।
॥ध्यानम् ॥
कनककुण्डल-मण्डित-षण्मुखं वनजराजित लोचनम्।
निशित शस्त्र-शरासन-धारिणं शरवणोद्भवमीश-सुतं भजे ॥
```

लिमत्यादिभिः पञ्चपूजा ॥

स्कन्दस्य कवचं दिव्यं नाना रक्षाकरं परम्। पुरा पिनाकिना प्रोक्तं ब्रह्मणोऽनन्त-शक्तये ॥ १॥

तदहं सम्प्रवक्ष्यामि भद्रं ते शृणु नारद। अस्ति गुह्यं महापुण्यं सर्व-प्राणि प्रियं-करम् ॥ २॥

जप-मात्रेण पापघ्नं सर्व-काम-फल-प्रदम्। मन्त्र-प्राणमिदं ज्ञेयं सर्व-विद्यादि-कारकम् ॥ ३॥

स्कन्दस्य कवचं दिव्यं पठनाद्व्यादि-नाशनम्। पिशाच घोर-भूतानां स्मरणादेव शान्तिदम् ॥४॥

पितं स्कन्द-कवचं श्रद्धयानन्य-चेतसा। तेषां दारिद्य-दुरितं न कदाचिद्भविष्यति ॥५॥

भूयस्साम्राज्य संसिद्धिरन्ते कैवल्यमक्षयम्। दीर्घायुष्यं भवेत्तस्य स्कन्दे भक्तिश्च जायते ॥ ६॥

शिखां रक्षेत्कुमारस्तु कार्तिकेयश्शिरोऽवतु। ललाटं पार्वतीसूनुः विशाको भ्रूयुगं मम ॥७॥ लोचने क्रौञ्चभेदी च नासिकां शिखिवाहनः। कर्णद्वयं शक्तिधरः कर्णमूलं षडाननः॥८॥

गंडयुग्मं महासेनः कपोलौ तारकान्तकः । ओष्टद्वयञ्च सेनानीः रसनां शिखि-वाहनः ॥ ९॥

तालू कलानिधिः पातु दन्ताञ्च देवशिखामणिः ॥ १०॥

गाङ्गेयश्चुबुकं पातु मुखं पातु शरोद्भवः। हनू हरसुतः पातु कण्ठं कारुण्य-वारिधिः॥ १९॥

स्कन्धावुमासुतः पातु बाहुलेयो भुज-द्वयम्। मध्यं जगद्विभुः पातु नाभिं द्वादश-लोचनः १२॥

किं द्विषड्भुजः पातु गुह्यं गङ्गासुतोऽवतु। जघनं जाह्नवीसूनुः पृष्ठभागं परंतपः ॥ १३॥

ऊरू रक्षेदुमा-पुत्रः जानु-युग्मं जगद्धरः । जंघे पातु जगत्पूज्यः गुल्फौ पातु महाबलः ॥ १४॥

पादौ पातु परंज्योतिः सर्वाङ्गं कुक्कुटद्ध्वजः । ऊर्ध्वं पातु महोदारः अधस्तात्पातु शांकरिः ॥ १५॥ पार्श्वयोः पातु शत्रुघ्नः सर्वदा पातु शाश्वतः ।

प्रातः पातु परं ब्रह्म मद्ध्याह्ने युद्धकौशलः ॥ १६॥

अपराह्ने गुहः पातु रात्रौ दैत्यान्तकोऽवतु।

त्रिसन्ध्यन्तु त्रिकालज्ञः अन्तरथं पात्वरिन्दमः ॥ १७॥

बहिस्थितं पातु खढ्गी निषण्णं कृत्तिकासुतः।

व्रजन्तं प्रथमाधीशः तिष्ठन्तं पातु पाशभृत् ॥ १८॥

शयने पातु मां शूरः मार्गे मां पातु शूरजित्।

उग्रारण्ये वज्रधरः सदा रक्षतु मां वटुः ॥ १९॥

सुब्रह्मण्यस्य कवचं धर्मकामार्थ-मोक्षदम्। मन्त्राणां परमं मन्त्रं रहस्यं सर्व-देहिनाम् ॥ २०॥

सर्वरोग-प्रशमनं सर्व-व्याधि विनाशनम्। सर्व-पुण्य प्रदं दिव्यं सुभगैश्वर्य वर्धनम् ॥ २१॥

सर्वत्र शुभदं नित्यं यः पठेद्वज्र-पन्जरम्। सुब्रह्मण्यरसुसम्प्रीतो वाञ्छितार्थान् प्रयच्छति ॥ २२॥

देहान्ते मुक्तिमाप्नोति स्कन्दवर्मानुभावतः॥

॥ इति स्कान्दे अगस्त्य नारद संवादे शिव-प्रोक्तं

सुब्रह्मण्य कवचं सम्पूर्णम्॥

Encoded and proofread by N.Balasubramanian bbalu@satyam.net.in

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated ব্oday

http://sanskritdocuments.org

```
Subrahmanya Kavacham 2 Lyrics in Devanagari PDF
% File name: subrahmaNyakavacham2.itx
% Category: kavacha
% Location : doc\ subrahmanya
% Language: Sanskrit
% Subject: philosophy/hinduism/religion
% Transliterated by: N.Balasubramanian bbalu at satyam.net.in
% Proofread by: N.Balasubramanian bbalu at satyam.net.in
% Latest update: January 7, 2009, May 18, 2012
% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com
% Site access: http://sanskritdocuments.org
% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study
% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of
% any website or individuals or for commercial purpose without permission.
% Please help to maintain respect for volunteer spirit.
%
```

We acknowledge well-meaning volunteers for <u>Sanskritdocuments.org</u> and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.

Please check their sites later for improved versions of the texts.

This file should strictly be kept for personal use.

| PDF file is generated | [December 8, 20 | 15] at <u>Stotram</u> V | Vebsite | |
|-----------------------|------------------|-------------------------|---------|--|
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |